SEMESTER -1

MJC-1 : हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक

COURSE OBJECTIVES

हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों से अधिक के इतिहास के प्रारम्भिक एवं संक्रमणकालीन दौर के निर्माण की गाथा से परिचित कराना इस पत्र का उद्देश्य है। भाषा-साहित्य के व्यापक परिवर्तनों से भरे इस दौर के अध्ययन से किसी भी भाषा-साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हुआ जा सकता है।

हिन्दी भक्तिकाव्य भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में व्याप्त अखिल भारतीय आंदोलन का हिस्सा था। इसके साहित्य के निर्माण में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों एवं जातियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। भक्तिकाव्य भारत की सामासिक संस्कृति का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसका परिचय इस पत्र के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

	MJC-1 : हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक (Theory: 6 Credits)		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 6-1-0 Per week**
1.	• हिंदी साहित्येतिहास दृष्टि : इतिहास और साहित्य का इतिहास ; काल विभाजन एवं नामकरण संबंधी समस्याएँ • आदिकालीन साहित्य: नामकरण और काल- निर्धारण • आदिकालीन साहित्य की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि	15	
2	• आदिकालीन काव्य के विभिन्न रूपों का समीक्षात्मक परिचय : सिद्ध-जैन काव्य, रासो काव्य, लौकिक काव्य एवं अन्य काव्य ; आदिकालीन काव्य की महत्वपूर्ण विशेषताएं एवं प्रवृत्तियां	15	
3	• भक्तिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि • भक्तिकालीन काव्य के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार • हिन्दी भक्तिकालीन काव्य : अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य	12	
4	• भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएं और प्रवृत्तियाँ : उनके आपसी संबंध और वैशिष्ट्य	12	
5	• रीतिकालीन काव्य : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, नामकरण एवं काल-निर्धारण • रीतिकालीन काव्य की प्रमुख धाराएँ और उसके महत्वपूर्ण कवि	09	

Scanned with CamScanner

6.	• रीतिकालीन काव्य की भाषिक-साहित्यिक विशेषताएं और प्रवृत्तियाँ • आदिकालीन एवं मध्यकालीन साहित्य का समग्र मूल्यांकन	12	
	कुल योग	75	

COURSE OUTCOMES - इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी साहित्य की प्रारम्भिक अवस्थाओं / स्थितियों का परिचय मिलेगा। भारतीय साहित्य की परम्पराओं से हिन्दी साहित्य को विरासत के रूप में साहित्य और संस्कृति की कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्राप्त हुईं - इसका पता चलेगा। भक्ति आन्दोलन से जिस गंगा-जमुनी भारतीय संस्कृति का प्रचलन हुआ उसका ज्ञान विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से प्राप्त होगा।

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल :आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
4. हिंदी साहित्य का इतिहास :लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन : नलिनविलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
7. साहित्य की इतिहास दृष्टि : मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य संवेदना का विकास : रामस्वरुप चहतुर्वेदी

Scanned with CamScanner

MJC-2 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

COURSE OBJECTIVES

हिंदी कविता का बहुत बड़ा हिस्सा इस पत्र से सम्बद्ध है। आदिकालीन कविता हिंदी में कविता का निर्माण-काल है। इसकी एक धारा के प्रमुख कवि विद्यापति हैं, जिन्हें अंतरप्रांतीय लोकप्रियता हासिल है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वर्णकाल कहा जाता है। इस काल की विभिन्न धाराओं से जुड़े कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे महान कवि हुए हैं। इन कवियों के काव्य के अध्ययन-आस्वादन से पाठकों के काव्यविवेक को तो दिशा मिलेगी ही, अपने देश और समाज को समझने में भी भरपूर मदद मिलेगी। साथ ही रीतिकाल के बिहारी एवं घनानन्द जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविता के अध्ययन से हिन्दी कविता के एक भिन्न किन्तु महत्वपूर्ण स्वरूप से परिचय होगा।

	MJC-2 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता **(Theory: 6 Credits)**		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 6-1-0**
1	• **विद्यापति** (विद्यापति पदावली, संपादक : रामवृक्ष बेनीपुरी) • देख देख राधा रूप अपार .....(2) • जय जय भैरवि .....(3) • सैसव जौवन दुहु मिली गेल ....(4) • कामिनी करए सनाने .....(23) • ए सखी पेखल एक अपरूप .....(36) • कुंज भवन सं निकसल रे ..... (59) • तातल सैकत बार–बिन्दु सम ..(254) • **कबीर** (कबीर ग्रंथावली, संपादक : बाबू श्याम सुंदर दास) • ऐसा भेद बिगुचन भारी .....(47) • अकथ कहानी प्रेम की ....(156) • लोका मति के भोरा रे....(402)	14	
2	➢ **मलिक मुहम्मद जायसी** (पद्मावत, संपादक : वासुदेवशरण अग्रवाल) • मानसरोदक खण्ड	14	

Scanned with CamScanner

	• नागमती संदेश खण्ड ➢ **सूरदास** (श्रीकृष्ण बाल-माधुरी : गीता प्रेस, गोरखपुर) • कहन लागे मोहन मैया-मैया.....(88) • देखौ माई! कान्ह हिलकियानी रोवै...(229) • मैया! हौं गाइ चरावन जैहों .....(281)		
3	➢ **तुलसीदास** (कवितावली : काशी नागरी प्रचारिणी सभा) • अवधेश के द्वारे सकारे गए ... (बालकाण्ड) • पात भरी सहरी, सकल सुत बारे-बारे (अयोध्याकाण्ड, 8) • संकर-सहर सर, नरनारि बारिचर... (काशी में महामारी, 176 और 177) • रामचरितमानस (अयोध्याकांड), गीता प्रेस, गोरखपुर : दोहा सं. 252 से 269 और 303 से 308	16	
4	➢ **रहीम** (रहीम ग्रंथावली, खण्ड चार) • बरवै संख्या 10 से 30 तक ➢ **मीराँबाई** की पदावली : सं. परशुराम चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग पद सं. 3, 17, 19, 32, 36, 38, 46, 53, 70, 116	10	
5	➢ **बिहारी** (बिहारी रत्नाकर : संपादक - श्री जगन्नाथदास रत्नाकर) दोहा संख्या- 1, 8, 16, 20, 32, 35, 38, 51, 63, 67, 69, 70, 73, 78, 84, 94, 121, 141, 143, 182, 255, 299, 301, 420, 663	08	
6.	➢ **घनानंद** (घनानंद कबित्त, भूमिका : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) • भये अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी...(7) • हीन भएँ जल मीन अधीन .....(8) • मीत सुजान अनीत करौ जिन..... (9) • पहिलें घन-आनंद सींचि सुजान..... (10) • तब तौ छवि पीवत जीवत हे.....(13) • पहिले अपनाय सुजान सनेह सों.....(14) • रावरे रूप की रीति अनूप..... (15) • अति सूधो सनेह को मारग है.....(82)	13	

Scanned with CamScanner

	➢ रसखान • मानुष हौं तो वही 'रसखानि' बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन... • कान्ह भये बस बाँसुरी के अब कौन सखि हमकों चहिहैं ..... • मेरौ सुभाय चितैबो कौ माई री लाल निहारी कै बंसी बजाई.....		
	कुल योग	75	

COURSE OUTCOMES

इस पत्र को पढ़ने के बाद हिंदी के आदिकाल से लेकर रीतिकाल के विशिष्ट कवियों के काव्य वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे। इन कवियों के अध्ययन से हिंदी कविता के वैविध्य से परिचित होने का आपको अवसर मिलेगा। तदयुगीन ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक यथार्थ से कविता के संबंध की व्याख्या कर सकेंगे। साथ ही कविताओं के पाठगत अध्ययन से आपकी संवेदना का विकास होगा और आपकी भाषा समृद्ध होगी।

सहायक पुस्तकें –

1. विद्यापति : शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
2. जायसी : विजय देवनारायण साही, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद
3. सूफीमत: साधना और साहित्य : राम पूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
4. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अकथ कहानी प्रेम की : पुरूषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. सूरदास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
7. तुलसीदास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
8. सूर साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. बिहारी : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा: मनोहर लाल गौड़

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम

MJC-3 : हिन्दी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल

इकाई-1 : भारतेन्दु एवं द्विवेदी युग

इकाई-2 : छायावाद

इकाई-3 : प्रगतिवाद, उत्तर छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, साठोत्तरी कविता

इकाई-4 : समकालीन कविता (1980 से आज तक)

इकाई-5 : स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी गद्य एवं उसकी विविध विधाओं का विकास

इकाई-6 : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य एवं उसकी विविध विधाओं का विकास

MJC-4 : आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद तक

इकाई-1 : भारतेन्दु — भारत दुर्दशा
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'—प्रियप्रवास (प्रथम सर्ग, प्रारंभिक 11-20 छंद)

इकाई-2 : मैथिली शरण गुप्त — 'पंचवटी' खण्ड काव्य (प्रारंभिक 1-16 छंद)
रामनरेा त्रिपाठी — 'स्वप्न' खण्ड काव्य (पहला सर्ग, प्रारंभिक 1-12 छंद)

इकाई-3 : जय शंकर प्रसाद —'लहर' — बीती विभावरी जाग री, वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे, जग की सजल कालिमा रजनी

इकाई-4 : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला — 'राग-विराग' (सं.—राम विलास शर्मा) — बादल-राग : छटा भाग वर दे वीणावादिनी वर दे, राजे ने अपनी रखवाली की, शिशिर कील शर्वरी

इकाई-5 : सुमित्रानंदन पंत — तारापथ — प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण, नौका विहार

इकाई-6 : महादेवी वर्मा — 'आधुनिक कवि' (हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग) — विरह का जलज़ात जीवन, मधुर-मधुर मेरे दीपक जल, मैं नीर भरी दुख की बदली

Scanned with CamScanner

सेमेस्टर-IV

MJC-5 : छायावादोत्तर हिन्दी कविता

इकाई-1 : **केदारनाथ अग्रवाल**—माँझी ! न बजाओ वंशी, वह जन मारे नहीं मरेगा, यदि आयेगा डॉलर, खेत का दृश्य, चंद्रगहना से लौटती बेर, बसंती हवा।

इकाई-2 : **नागार्जुन**—घिन तो नहीं आती, बादल को घिरते देखा है, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, अकाल और उसके बाद, मैं तुम्हें अपना चुंबन दूँगा।

इकाई-3 : **रामधारी सिंह 'दिनकर'**—कुरुक्षेत्र (षष्ठ सर्ग)।

इकाई-4 : **माखनलाल चतुर्वेदी**—झरना, कैदी और कोकिला, नाश का त्यौहार (हिमकिरीटिनी)

स. ही. वा. 'अज्ञेय'—कलगी बाजरे की, कतकी पूनो, सोन-मछली, नदी के द्वीप, साम्राज्ञी का नेवैद्य दान।

इकाई-5 : **भवानीप्रसाद मिश्र**—सतपुड़ा के जंगल, गीत-फरोश (दूसरा सप्तक)।

रघुवीर सहाय—पढ़िए गीता, रामदास, हँसो हँसो जल्दी हँसो, नेता क्षमा करें।

इकाई-6 : **ग. मा. 'मुक्तिबोध'**—मुझे कदम-कदम पर, मुझे पुकारती हुई पुकार।

गिरिजा कुमार माथुर—आज हैं केसर रंग रंग वन, बुद्ध (तारसप्तक)।

MJC-6 : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

इकाई-1 : **भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास :** सामान्य परिचय, काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य-प्रयोजन।

इकाई-2 : काव्य-भेद, शब्द-शक्ति, काव्य-गुण, काव्य-दोष।

इकाई-3 : रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य सिद्धान्तों का सामान्य परिचय।

इकाई-4 : **प्रमुख अलंकारों के लक्षण**—उदाहरण-यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, श्लेष, असंगति, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, विभावना, मानवीकरण।

प्रमुख छंदों के लक्षण-उदाहरण-दोहा, चौपाई, रोला, सोरठा, कवित्त, सवैया, छप्पय, कुंडलिया, वरवै, उल्लाला।

इकाई-5 : **पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास :** सामान्य परिचय।

प्लेटो, अरस्तु, लोंजाइनस की काव्य सम्बन्धी मान्यताएँ एवं सिद्धान्त।

इकाई-6 : वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, क्रोचे एवं इलियट की काव्य सम्बन्धी मान्यताएँ एवं सिद्धान्त।

MJC-7 : हिन्दी की साहित्यक विधाएँ : उद्‌भव और विकास

इकाई-1 : **साहित्य का स्वरूप :** संक्षिप्त परिचय (भेद लक्षण एवं तत्त्व : भारतीय एवं पाश्चात्य मत)

इकाई-2 : **हिन्दी की साहित्यिक विधाएँ :** सामान्य परिचय एवं उद्‌भव और विकास।

पद्य : महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चम्पूकाव्य, स्फुटकाव्य।

इकाई-3 : गीत काव्य, प्रगीत, नयी कविता, नवगीत।

इकाई-4 : **गद्य :** उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, यात्रा-वृत्तांत।

इकाई-5 : पत्र-साहित्य, डायरी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र/शब्दचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा।

इकाई-6 : साहित्यिक विधाओं में अन्तर— • महाकाव्य और खण्डकाव्य, • प्रबन्ध काव्य और मुक्तककाव्य, • उपन्यास और कहानी, • नाटक और एकांकी, • संस्मरण और भात्रा वृत्तांत, • जीवनी और आत्मकथा, • रेखाचित्र और संस्मरण।

Scanned with CamScanner